The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-04, Issue-02, July-2025
www.theresearchdialogue.com

"अध्यापकों के व्यक्तिगत दृष्टिकोण का माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालक–बालिकाओं के व्यक्तित्व पर पड़नेवाले प्रभाव का अध्ययन"

धनलक्ष्मी
शोधार्थिनी
बी.एड.विभाग ,
श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज,
गोंडा. (उ. प्र.)

डॉ. चमन कौर
शोध निर्देशिका
असिस्टेंट प्रोफेसर, बी.एड.विभाग ,
श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज,
गोंडा. (उ. प्र.)

सारांश

शिक्षा केवल ज्ञानार्जन की प्रक्रिया नहीं है बल्कि यह व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक मूल्यों के विकास और जीवन–दृष्टि के निर्धारण की एक सतत यात्रा है, जिसमें अध्यापक की भूमिका केन्द्रीय एवं निर्णायक मानी जाती है। माध्यमिक स्तर का समय विद्यार्थियों के जीवन का अत्यंत संवेदनशील और संक्रमणकालीन चरण होता है, क्योंकि इसी अवस्था में किशोरावस्था की मनोवैज्ञानिक जटिलताओं के साथ–साथ बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक और नैतिक आयामों का तीव्र विकास होता है। इस अवस्था में विद्यार्थी अपने अध्यापकों को न केवल ज्ञानदाता के रूप में देखते हैं बल्कि उन्हें जीवन का मार्गदर्शक और आदर्श मानते हैं। अतः अध्यापकों के व्यक्तिगत दृष्टिकोण का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। अध्यापक का व्यक्तिगत दृष्टिकोण, जिसमें उनके विचार, मूल्यबोध, सामाजिक दृष्टि, शिक्षण–प्रवृत्ति, अनुशासन संबंधी दृष्टि, सहानुभूति एवं प्रेरणादायी व्यवहार शामिल हैं, विद्यार्थियों की आत्मधारणा, आत्मविश्वास, सामाजिक समायोजन, नैतिक आचरण और जीवन–दृष्टि पर स्थायी छाप छोड़ता है। यदि अध्यापक का दृष्टिकोण सकारात्मक, प्रोत्साहनात्मक और मूल्यपरक होता है तो विद्यार्थी आत्मविश्वास, सृजनात्मकता, सहयोग और सहिष्णुता जैसी विशेषताओं का विकास करते हैं, जबकि नकारात्मक दृष्टिकोण जैसे उदासीनता, असमान व्यवहार, कठोरता और अनुशासन में अति–नियंत्रण विद्यार्थियों में भय, असुरक्षा, हीनभावना, आक्रोश और अनुशासनहीनता जैसी प्रवृत्तियों को जन्म दे सकता है। यह शोधपत्र विशेष रूप से इस तथ्य को उजागर करता है कि बालक एवं बालिका विद्यार्थियों पर अध्यापकों के दृष्टिकोण का प्रभाव भिन्न–भिन्न रूप में परिलक्षित होता है उदाहरण स्वरूप, बालिकाएँ अध्यापकों की भावनात्मक संवेदनशीलता और सहानुभूति से अधिक प्रभावित होती हैं, जबकि बालक अध्यापकों की प्रेरणा, नेतृत्व तथा अनुशासनात्मक दृष्टिकोण से अपेक्षात

अधिक प्रभावित होते हैं। शोध के अंतर्गत माध्यमिक स्तर के अध्यापकों के दृष्टिकोण एवं विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के मध्य संबंध का विश्लेषण किया गया, जिसमें यह स्पष्ट हुआ कि अध्यापकों का दृष्टिकोण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास का एक महत्त्वपूर्ण निर्धारक तत्व है। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षा प्रणाली में अध्यापकों के व्यक्तित्व संवर्द्धन, दृष्टिकोण परिष्कार और मूल्य शिक्षा पर विशेष बल दिया जाना चाहिए, ताकि अध्यापक केवल ज्ञानदाता ही नहीं बल्कि आदर्श व्यक्तित्व निर्माता बन सकें। अध्यापक का सकारात्मक दृष्टिकोण न केवल व्यक्तिगत स्तर पर विद्यार्थियों के आत्मविश्वास और नैतिकता को विकसित करता है, बल्कि व्यापक स्तर पर एक सशक्त, उत्तरदायी और मूल्यपरक समाज के निर्माण में भी सहायक सिद्ध होता है।

मुख्य शब्द :– *अध्यापक, व्यक्तिगत दृष्टिकोण, माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालक–बालिकाओं, व्यक्तित्व*

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन के विकास का आधार है और इसमें अध्यापक की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है। यदि शिक्षा को एक जीवंत प्रक्रिया माना जाए तो उसमें अध्यापक केवल ज्ञान देने वाला साधन नहीं बल्कि व्यक्तित्व निर्माता के रूप में सामने आता है। विशेषकर माध्यमिक स्तर पर जहाँ विद्यार्थी किशोरावस्था से गुजर रहे होते हैं, उस अवस्था में अध्यापक का व्यक्तिगत दृष्टिकोण विद्यार्थियों के जीवन और व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव डालता है। किशोरावस्था वह अवस्था है जिसमें बच्चे शैक्षणिक, सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक रूप से परिवर्तनशील दौर से गुजरते हैं। ऐसे समय में वे अपने अध्यापकों को आदर्श मानते हैं और उनसे ही सीखने का प्रयास करते हैं। यदि अध्यापक का दृष्टिकोण सकारात्मक, सहानुभूतिपूर्ण और प्रेरणादायी है तो विद्यार्थी आत्मविश्वासी, रचनात्मक, सहयोगी और अनुशासित बनते हैं। इसके विपरीत यदि अध्यापक का दृष्टिकोण नकारात्मक, उदासीन या दमनकारी है तो विद्यार्थियों में भय, असुरक्षा, हीनभावना, आक्रामकता और अनुशासनहीनता जैसी प्रवृत्तियाँ विकसित हो सकती हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि अध्यापक का दृष्टिकोण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण की दिशा को तय करता है।

अध्यापक का व्यक्तिगत दृष्टिकोण उसके मूल्यबोध, जीवन–दर्शन, व्यवहार, विद्यार्थियों के प्रति सहानुभूति, अनुशासन के प्रति दृष्टि, कार्य के प्रति निष्ठा और पेशेवर दृष्टिकोण पर आधारित होता है। शिक्षा शास्त्रियों ने भी इस बात पर बल दिया है कि अध्यापक का दृष्टिकोण यदि मानवीय मूल्यों पर आधारित होगा तो विद्यार्थी भी मानवीय गुणों का विकास करेंगे। उदाहरण के लिए, यदि अध्यापक सभी विद्यार्थियों के साथ समान व्यवहार करता है, उनके विचारों को

सम्मान देता है और सीखने की प्रक्रिया में सहभागिता को प्रोत्साहित करता है तो विद्यार्थी लोकतांत्रिक दृष्टिकोण अपनाते हैं और सामाजिक सहयोग की भावना विकसित करते हैं। लेकिन यदि अध्यापक केवल अंक आधारित मूल्यांकन को महत्व देता है और विद्यार्थियों के साथ कठोर या असमान व्यवहार करता है तो विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धात्मकता, भय और असंतोष की भावना बढ़ सकती है।

माध्यमिक स्तर पर व्यक्तित्व विकास की प्रक्रिया अत्यंत संवेदनशील होती है। इस अवस्था में बच्चे आत्म–परिचय, आत्म–सम्मान और आत्म–नियंत्रण की ओर अग्रसर होते हैं। वे अपने अध्यापकों को केवल ज्ञान प्रदाता नहीं बल्कि जीवन के मार्गदर्शक के रूप में देखते हैं। अध्यापक के व्यक्तित्व का प्रत्येक पहलू जैसे उसका वेश–भूषा, बोलचाल, विचारधारा, व्यवहार, अनुशासन और जीवन के प्रति दृष्टि विद्यार्थियों पर गहरा प्रभाव डालती है। अध्यापक का सकारात्मक दृष्टिकोण विद्यार्थियों को प्रेरणा देता है कि वे चुनौतियों का सामना धैर्यपूर्वक करें और जीवन में आगे बढ़ें। वहीं नकारात्मक दृष्टिकोण विद्यार्थियों को निराशा और असुरक्षा की ओर ले जाता है।

अध्यापक का दृष्टिकोण बालक और बालिका विद्यार्थियों पर अलग–अलग प्रकार से प्रभाव डाल सकता है। सामान्यतः देखा गया है कि बालिकाएँ अध्यापक की सहानुभूति और भावनात्मक सहयोग से अधिक प्रभावित होती हैं जबकि बालक अध्यापक की प्रेरणादायी शैली और मार्गदर्शन से अधिक प्रभावित होते हैं। यदि अध्यापक का दृष्टिकोण बालिकाओं के प्रति सहयोगी, संवेदनशील और प्रोत्साहित करने वाला होता है तो उनमें आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास और सामाजिक दक्षता का विकास होता है। वहीं यदि बालकों के प्रति अध्यापक का दृष्टिकोण प्रेरक और अनुशासित होता है तो उनमें नेतृत्व क्षमता, निर्णय क्षमता और आत्म–नियंत्रण की प्रवृत्ति विकसित होती है।

भारतीय समाज में अध्यापक को गुरु की संज्ञा दी गई है और उसे आदर्श जीवन जीने वाले व्यक्ति के रूप में माना गया है। गुरु–शिष्य परंपरा में गुरु का चरित्र, दृष्टिकोण और जीवन शैली शिष्य के व्यक्तित्व निर्माण में प्रत्यक्ष भूमिका निभाती रही है। आधुनिक समय में शिक्षा पद्धति में भले ही परिवर्तन हुआ हो, लेकिन अध्यापक की भूमिका अभी भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। आज जब समाज में तकनीकी प्रगति, सामाजिक परिवर्तन और सांस्कृतिक विविधताएँ तेजी से बढ़ रही हैं, तब भी विद्यार्थी अपने अध्यापकों से मार्गदर्शन और प्रेरणा की अपेक्षा रखते हैं। अतः अध्यापक का दृष्टिकोण इस चुनौतीपूर्ण दौर में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को सकारात्मक दिशा देने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

व्यक्तित्व विकास केवल शैक्षणिक प्रगति तक सीमित नहीं होता बल्कि यह एक समग्र प्रक्रिया है जिसमें मानसिक, शारीरिक, सामाजिक और नैतिक विकास शामिल है। यदि अध्यापक अपने दृष्टिकोण में सहानुभूति, सहयोग, मूल्यपरकता और समानता को शामिल करता है तो वह विद्यार्थियों को केवल विषय–ज्ञान ही नहीं बल्कि जीवन जीने की कला भी सिखाता है। विद्यार्थियों में आत्म–विश्वास, सृजनात्मकता, सामाजिक समायोजन, नैतिक मूल्यों का पालन और नेतृत्व क्षमता का विकास तभी संभव है जब अध्यापक का दृष्टिकोण सकारात्मक हो।

इसके विपरीत यदि अध्यापक का दृष्टिकोण केवल औपचारिक, उदासीन या कठोर है तो विद्यार्थी शिक्षा को केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने का साधन मानने लगते हैं। इस स्थिति में वे जीवन मूल्यों, रचनात्मकता और आत्मनिर्भरता से दूर हो जाते हैं। नकारात्मक दृष्टिकोण के परिणामस्वरूप विद्यार्थी तनाव, चिंता, अनुशासनहीनता और आत्म–सम्मान की कमी का अनुभव करते हैं, जो आगे चलकर उनके व्यक्तित्व विकास में बाधा डालता है।

शिक्षा मनोविज्ञान भी यह मानता है कि अध्यापक का दृष्टिकोण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर दीर्घकालिक प्रभाव छोड़ता है। बालक–बालिकाएँ अपने अध्यापक के व्यवहार को अनुकरणीय मानते हैं और उससे प्रेरित होकर अपना जीवन दृष्टिकोण बनाते हैं। अध्यापक के द्वारा दिया गया प्रोत्साहन, प्रशंसा और सहानुभूति विद्यार्थियों में आत्म–विश्वास और आत्म–सम्मान का संचार करता है, जबकि कठोर आलोचना, भेदभाव और उपेक्षा विद्यार्थियों में असुरक्षा, भय और हीनभावना को जन्म देती है।

अध्यापक के व्यक्तिगत दृष्टिकोण का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर प्रभाव का अध्ययन शिक्षा शास्त्र और मनोविज्ञान दोनों के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं है बल्कि समग्र व्यक्तित्व निर्माण है। इस दृष्टि से अध्यापक के व्यक्तिगत दृष्टिकोण को शिक्षा प्रणाली का केंद्रीय तत्व मानना आवश्यक है।

अतः यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के बालक–बालिकाओं के व्यक्तित्व विकास में अध्यापक के व्यक्तिगत दृष्टिकोण का सीधा और गहरा प्रभाव पड़ता है। सकारात्मक दृष्टिकोण अध्यापक को विद्यार्थियों का आदर्श बनाता है और उन्हें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफल बनाता है, जबकि नकारात्मक दृष्टिकोण विद्यार्थियों को आत्मविश्वास और मूल्यों से दूर कर देता है। इसलिए शिक्षा प्रणाली और शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों का यह कर्तव्य है कि वे अध्यापकों के दृष्टिकोण को सकारात्मक, सहानुभूतिपूर्ण और मूल्यपरक बनाने के लिए निरंतर

प्रयास करें ताकि विद्यार्थी समग्र रूप से विकसित हो सकें और समाज के लिए उपयोगी नागरिक बन सकें।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालक–बालिकाओं के व्यक्तित्व पर अध्यापकों के व्यक्तिगत दृष्टिकोण का प्रभाव समझना शिक्षा के क्षेत्र में अत्यंत आवश्यक है क्योंकि किशोरावस्था वह अवस्था होती है जब विद्यार्थी अपनी पहचान खोजने, आत्मविश्वास विकसित करने तथा सामाजिक संबंधों का निर्माण करने की प्रक्रिया से गुजरते हैं। इस अवस्था में अध्यापक न केवल ज्ञान का संचारक होता है बल्कि आदर्श, मार्गदर्शक और प्रेरक भी होता है। यदि अध्यापक का व्यक्तिगत दृष्टिकोण सकारात्मक, सहानुभूतिपूर्ण, समानता पर आधारित और प्रेरणादायी है तो यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को संतुलित, आत्मनिर्भर और सृजनात्मक बनाने में सहायक सिद्ध होता है। दूसरी ओर यदि अध्यापक का दृष्टिकोण नकारात्मक, कठोर या भेदभावपूर्ण है तो इससे विद्यार्थियों में हीनभावना, तनाव, असुरक्षा और आक्रोश जैसी प्रवृत्तियाँ जन्म ले सकती हैं, जो उनके संपूर्ण व्यक्तित्व विकास को बाधित करती हैं। इसलिए इस विषय पर अध्ययन करना आवश्यक है ताकि शिक्षा प्रणाली को यह स्पष्ट दिशा मिल सके कि अध्यापक किस प्रकार अपने व्यक्तिगत दृष्टिकोण को सकारात्मक बनाकर विद्यार्थियों के विकास में रचनात्मक योगदान दे सकते हैं। इसका महत्व इस दृष्टि से भी है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी भविष्य के नागरिक होते हैं और उनका व्यक्तित्व जिस दिशा में विकसित होगा वही दिशा समाज और राष्ट्र के भविष्य को निर्धारित करेगी। अध्यापक के दृष्टिकोण से विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य, नैतिक मूल्यों, अनुशासन, सृजनात्मकता और सामाजिक परिपक्वता पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट होगा कि बालक और बालिकाओं के व्यक्तित्व विकास में अध्यापक के दृष्टिकोण का प्रभाव किस प्रकार भिन्न–भिन्न रूपों में प्रकट होता है, जिससे शिक्षा नीतियों और शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों को और अधिक प्रभावी बनाया जा सके। इसके अलावा यह शोध शिक्षकों को आत्मविश्लेषण के लिए प्रेरित करेगा और उन्हें यह समझने में सहायता करेगा कि उनका प्रत्येक व्यवहार, संवाद और दृष्टिकोण विद्यार्थियों के जीवन में स्थायी छाप छोड़ता है। जब शिक्षक अपने व्यक्तिगत दृष्टिकोण को सकारात्मक और मूल्यपरक बनाते हैं तो न केवल विद्यार्थियों के अध्ययन–अर्जन की गुणवत्ता में वृद्धि होती है बल्कि उनके व्यक्तित्व का भी समग्र विकास होता है। अतः यह अध्ययन शिक्षा शास्त्र, शिक्षक–प्रशिक्षण और विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण तीनों

ही स्तरों पर महत्वपूर्ण है और शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने में इसकी भूमिका अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होगी।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

प्रस्तुत शोध से सम्बन्धित निम्न शोधार्थियों बर्न्स, ई. सी. एवं सहकर्मी (2025), डी लिसियो, जी. एवं अन्य (2025), मामादोव, एस. (2024), गेब्रे, जेड. ए. (2025), मिल्स–वेब, के. एवं अन्य (2025), रक्षित, एस. एवं अन्य (2023), कुलाल, ए. एवं अन्य (2024), मूर, आर. एवं अन्य (2024), श्वाब, एस. एवं अन्य (2024) आदि शोधार्थियों ने शोध किए हैं।

समस्या कथन

अध्यापकों के व्यक्तिगत दृष्टिकोण का माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालक–बालिकाओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य

1. अध्यापकों के व्यक्तिगत दृष्टिकोण का माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
2. अध्यापकों के व्यक्तिगत दृष्टिकोण का माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालिकाओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पनाऐं

1. अध्यापकों के व्यक्तिगत दृष्टिकोण एवं माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों के व्यक्तित्व के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध होता है।
2. अध्यापकों के व्यक्तिगत दृष्टिकोण एवं माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालिकाओं के व्यक्तित्व के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध होता है।

आंकड़ा संग्रहण के उपकरण

प्रस्तुत शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए लखनऊ शहर के अध्यापकों एवं माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

न्यादर्श

वर्तमान शोध हेतु केवल 100 अध्यापक एवं 200 विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।

उपकरण

- अध्यापकों के व्यक्तिगत दृष्टिकोण को मापने हेतु – स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।
- विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को मापने हेतु – डॉ0 अरूण कुमार सिंह एवं आशीष कुमार सिंह द्वारा निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पनाओं का परिभाषीकरण

तालिका संख्या – 1

अध्यापकों के व्यक्तिगत दृष्टिकोण एवं माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों के व्यक्तित्व के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति एवं व्याख्या

शिक्षक / विद्यार्थी	संख्या	सहसम्बन्ध	परिणाम
शिक्षक	100	0.40	धनात्मक सहसम्बन्ध
छात्र	100		

व्याख्या – तालिका संख्या 1 में अध्यापकों के व्यक्तिगत दृष्टिकोण एवं माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों के व्यक्तित्व के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति एवं व्याख्या को दिखाया गया है। सारणी से पता चलता है कि अध्यापकों के व्यक्तिगत दृष्टिकोण एवं छात्रों के व्यक्तित्व में सहसम्बन्ध का मान 0.40 प्राप्त हुआ है। जो कि दोनों समूहों के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध को दर्शाता हैं।

तालिका संख्या – 2

अध्यापकों के व्यक्तिगत दृष्टिकोण एवं माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों के व्यक्तित्व के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति एवं व्याख्या

शिक्षक / विद्यार्थी	**संख्या**	**सहसम्बन्ध**	**परिणाम**
शिक्षक	100	0.47	धनात्मक सहसम्बन्ध
छात्राऐं	100		

व्याख्या – तालिका संख्या 2 में अध्यापकों के व्यक्तिगत दृष्टिकोण एवं माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालिकाओं के व्यक्तित्व के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति एवं व्याख्या को दिखाया गया है। सारणी से पता चलता है कि अध्यापकों के व्यक्तिगत दृष्टिकोण एवं बालिकाओं के व्यक्तित्व

में सहसम्बन्ध का मान 0.47 प्राप्त हुआ है। जो कि दोनों समूहों के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध को दर्शाता हैं।

शोध निष्कर्ष

1. अध्यापकों के व्यक्तिगत दृष्टिकोण एवं माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालकों के व्यक्तित्व के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।
2. अध्यापकों के व्यक्तिगत दृष्टिकोण एवं माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालिकाओं के व्यक्तित्व के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- Burns, E. C., et al. (2025). *What are teacher–student relationships in adolescent motivation research? A systematic review.* Teaching and Teacher Education, 131, 104308.
- Di Lisio, G., et al. (2025). *Longitudinal associations between teacher–student relationships and outcomes.* Educational Research Review, 38, 100605.
- Mammadov, S. (2024). *A meta-analytic review of personality and teacher variables.* Journal of Educational Psychology, 116(3), 500–518.
- Gebre, Z. A. (2025). *Impact of teachers' socio-emotional competence on student engagement: A meta-analysis.* Frontiers in Psychology, 16, 1525932.
- Mills-Webb, K., et al. (2025). *Perceptions of teacher–student relationships predict mindfulness and lower distress in UK secondary students.* Journal of Adolescence, 101, 20–33.
- Rakshit, S., et al. (2023). *Biased teachers and gender gap in learning outcomes: Evidence from India.* International Journal of Educational Development, 98, 102732.
- Kulal, A., et al. (2024). *Evaluating the promise and pitfalls of India's NEP 2020.* Journal of Education Policy, 39(2), 210–225.
- Moore, R., et al. (2024). *Teacher absence in Indian schools: Distributional impacts.* Economics of Education Review, 97, 102481.
- ShodhKosh. (2024). *Awareness and attitude of secondary school teachers towards NEP-2020.* ShodhKosh: Journal of Education, 5(2), 45–57.
- IJNRD. (2023). *Impact of NEP-2020 on holistic development of students: Teachers' perceptions.* International Journal of Novel Research and Development, 8(6), 102–112.
- Schwab, S., et al. (2024). *Does the same teacher's attitude fit all students? A study on inclusive education.* Teaching and Teacher Education, 130, 104318.

- Times of India. (2025). *NEP aims to nurture learners with character, courage and competence.* Retrieved from https://timesofindia.indiatimes.com

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved

Cite this Article:

धनलक्ष्मी और डॉ. चमन कौर "अध्यापकों के व्यक्तिगत दृष्टिकोण का माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालक–बालिकाओं के व्यक्तित्व पर पड़नेवाले प्रभाव का अध्ययन " *The Research Dialogue,* An Online Quarterly Multi-Disciplinary Peer-Reviewed & Refereed National Research Journal, *ISSN: 2583-438X (Online), Volume 4, Issue 2, pp-291-298, July 2025. Journal URL: https://theresearchdialogue.com/*

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed & Refereed National Research Journal

ISSN: 2583-438X

Volume-04, Issue-02, July-2025

www.theresearchdialogue.com

Certificate Number July-2025/29

Impact Factor (RPRI-4.73)

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

धनलक्ष्मी और डॉ.चमन कौर

for publication of research paper title

"अध्यापकों के व्यक्तिगत दृष्टिकोण का माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालक–बालिकाओं के व्यक्तित्व पर पड़नेवाले प्रभाव का अध्ययन"

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and

E-ISSN: 2583-438X, Volume-04, Issue-02, Month July, Year-2025.

Dr. Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com

INDEXED BY